



Original Article

२१ वी सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित शैक्षिक समस्या

प्रा. बिसमिल्ला बा. मुल्ला

हलकर्णी महाविद्यालय, हलकर्णी, ता. गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130331

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 158 - 160

Submitted: 25 Jan. 2026

Revised: 1 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. बिसमिल्ला बा. मुल्ला

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785803

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785803>



Creative Commons



सार:

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है। हिंदी साहित्य और सिनेमा दोनों ही समाज के दर्पण हैं, जिन्होंने समय – समय पर शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं, शिक्षकों की स्थिति विद्यार्थियों की चुनोटियों और शिक्षा में व्याप्त असमानता को उजागर किया है। साहित्य जहाँ भावनात्मक और चिंतनशील दृष्टि देता है। वहीं सिनेमा दृश्यात्मक प्रभाव के माध्यम से व्यापक जनसमूह तक संदेश पहुँचता है।

मुख्य शब्द: २१ वी सदी का सिनेमा, हिंदी साहित्य, प्रमुख उदाहरण, विश्लेषण, समस्या, भविष्य की दिशा।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. बिसमिल्ला बा. मुल्ला. (2026). २१ वी सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित शैक्षिक समस्या. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 158 - 160. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785803>

प्रस्तावना:

इक्कीसवी सदी में भारतीय सिनेमा की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सद्बुद्ध बन गई है। इस सदी की सिनेमा की सबसे बड़ी पहचान यह है कि इसने अपने कथानकों में विविधता और यथार्थवाद का समावेश किया है। आज की हिंदी फिल्म केवल नायक-नायिका के रोमांस और नृत्य तक

सीमित नहीं है, वे व्यक्तिगत और सामाजिक मुद्दों पर भी खुलकर बात करती है।

२१ वी सदी विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण की सदी है। इस सदी में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। अब शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं बल्कि प्रतिस्पर्धा, रोजगार और प्रतिष्ठा का माध्यम बन चुकी है। हिंदी साहित्य और



सिनेमा दोनों ने इन परिवर्तनों को गहराई से देखा और समाज के सामने ‘शैक्षणिक समस्याओं’ का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

हिंदी साहित्य में शैक्षणिक समस्या का चित्रण:

२१ वीं सदी के उपन्यासों और कहानियों में शिक्षा को एक ‘उद्योग’ के रूप में दिखाया है। निजी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा का लक्ष्य ‘ज्ञान’ नहीं ‘लाभ’ बन गया है। प्रेमचंद ने जन-जागरण के माध्यम से शिक्षा को जनसुलभ बनाने की बात तो महादेवी वर्मा ने स्त्री शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया है। दिनकर जी ने शिक्षा को राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का माध्यम बताया है। समकालीन कहानियाँ जैसे ‘स्कूल का सपना’, ‘फ़िस’ आदि में शिक्षा की व्यावसायिक प्रवृत्ति की आलोचना की है। कवि राजेश जोशी और मंगलेश डबराल ने कविताओं में शिक्षण संस्थानों के बाजारीकरण पर तीखे प्रहार किए हैं। हिंदी साहित्य में बार-बार दिखाया गया है। शिक्षा तक पहुँच अब भी सबके लिए समान नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा संसाधनों की कमी और शहरी विद्यालयों की विलासिता का विरोधभास साहित्य में उजागर होता है।

हिंदी सिनेमा में शैक्षणिक समस्याओं का चित्रण:

२१ वीं सदी की कई फिल्मों ने शिक्षा – प्रणाली की वास्तविकता, विसंगतियों और सुधार की संभावनाएँ उजागर की हैं। जैसे

१. ‘तारे जमीन पर’ – शिक्षा में संवेदनशीलता और बच्चों की मनोवैज्ञानिक समझ को प्रस्तुत करती है। हर बच्चा अपनी तरह से अनोखा है। शिक्षा का उद्देश्य उसे समझना है दबाना नहीं यह दिखाया गया है।

२. ‘श्री इंडियट्स’ – इस सिनेमा में परीक्षा – आधारित प्रणाली और रटत शिक्षा पर व्यंग किया है। यह फिल्म भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानसिक दबाव को गहराई से उजागर करती है।

३. ‘हिंदी मीडियम’ – निजी स्कूलों में बदले व्यापार और अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व पर तीखा कटाक्ष किया है।

४. ‘हिचकी’ ‘चाक एन डस्टर’ – जैसी फिल्मों में दिखाया गया है कि एक अच्छा शिक्षक वही है जो छात्र की कमियों को उसकी ताकद बना दे और स्कूल के भीतर की राजनीति से लड़कर भी छात्र के भविष्य की रक्षा करे।

५. ‘सुपर ३०’ और ‘निल बटे सन्नाटा’ – गरीबी शिक्षा के रास्ते में बाधा नहीं होनी चाहिए। यह फिल्म बताती है कि एक माँ का दृढ़ निश्चय या एक शिक्षक का समर्पण किसी भी बच्चे का भविष्य बदल सकता है।

निष्कर्ष:

२१ वीं सदी की इन फिल्मों ने शिक्षा को चार – दिवारी और भारी बस्तों से बाहर निकालकर जीवन जीने की कला के रूप में पेश किया है। हिंदी साहित्य और सिनेमा दोनों शिक्षा की वास्तविकता और चुनौतियों को उजागर करते हैं। जब तक शिक्षा में संवेदना, समान अवसर और नैतिकता नहीं जुड़ेंगे, तब तक यह अधूरी रहेगी। साहित्य और सिनेमा दोनों मिलकर समाज को यह सोचने के लिए बाध्य करते हैं कि – “हम बच्चों को पढ़ा तो रहे हैं, पर क्या इंसान बना रहे हैं?”

संदर्भ सूची:

१. हिंदी साहित्य में शिक्षा की भूमिका – अजय कुमार त्रिपाठी नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, २०१५।
२. NCERT रिपोर्ट – “भारतीय शिक्षा में समनाता और चुनौतियाँ”



३. फिल्म संदर्भ:

- | | |
|--|---|
| i. तारे जमीन पर – निर्देशक – अमीर खान | iii. सुपर ३० निर्देशक – विकास बहल |
| ii. श्री इंडियट्स – निर्देशक – राजकुमार हिरानी | iv. हिंदी मीडियम – निर्देशक – साकेत चौधरी |